नजात की राह

हज़रत मूसा मिसर में

īmān kā safr. isrāīlī qaum registān meṅ

Journey of Faith. The Israelites in the Desert

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 8*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.

published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. CCXpistiavos https://pixabay.com/vectors/bible-moses-old-god-judaism-2153998/; R. Gunther https://freebibleimages.org/illustrations/ls-moses-red-sea/; https://freebibleimages.org/illustrations/ls-moses-manna/; https://freebibleimages.org/illustrations/ls-moses-cloud/

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

बस, चुप रहो	1
ईमान की लाठी उठाओ	6
ज़िंदगी की रोटी खा लो	11
ज़िंदगी का पानी पी लो	15
ज़िंदगी की राह पर चलो	19
तौरेत, ख़ुरूज 13–14; 16–17; 19–20	25

ख़ुदा ने इसराईली क़ौम से वादा किया था कि मैं तुम्हें मिसर की ग़ुलामी से छुड़ाऊँगा। और ऐसा ही हुआ। एक दिन मिसरी बादशाह ने मजबूर होकर उन्हें जाने दिया और वह निकले। लेकिन यह आम सफ़र नहीं था। यह ईमान का सफ़र था। ईमान के इस सफ़र का पहला क़दम क्या था? यह कि

बस, चुप रहो

तौरेत में लिखा है,

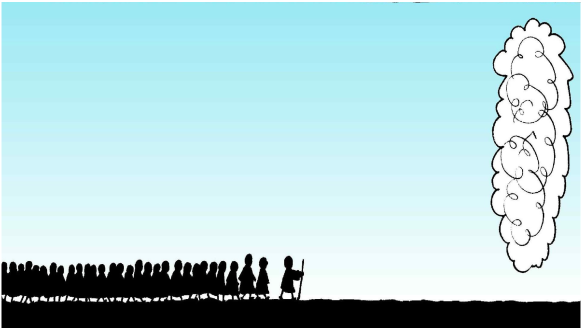

> रब उनके आगे आगे चलता गया, दिन के वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी मिले।

- **ख़ुदा की हुज़ूरी किस तरह मालूम होती थी?**

  यों कि दिन के वक़्त बादल का सतून उनके आगे आगे चलता गया जबकि रात के वक़्त आग का सतून।

- **सतून का मक़सद क्या था?**

  सतून लोगों की राहनुमाई करता था। साथ साथ वह अंधेरे को रौशन करता था। सतून इसका निशान था कि ख़ुदा साथ चल रहा है।

- **हम किस तरह जान सकते हैं कि ख़ुदा हमारे साथ है?**

  जब हम इसराईलियों की तरह उसके पीछे हो लेते हैं तब वह हमारे साथ है। फिर लिखा है,

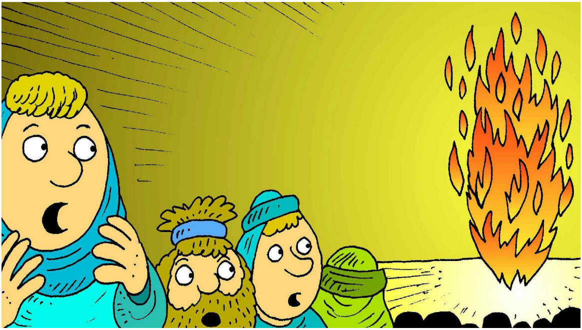

> जब बादशाह को इत्तला दी गई कि इसराईली हिजरत कर गए हैं तो उसने और उसके दरबारियों ने अपना ख़याल बदलकर कहा, “हमने क्या किया है? हमने उन्हें जाने दिया है, और अब हम उनकी ख़िदमत से महरूम हो गए हैं।” चुनाँचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तैयार करवाया और अपनी फ़ौज को लेकर निकला।

► **जब बादशाह को इत्तला मिली कि इसराईली सचमुच चले गए हैं तो उसे क्या महसूस हुआ?**

वह पछता गया।

► **क्यों पछता गया?**

इसलिए कि अब से हम इन लोगों से ग़लत फ़ायदा उठा नहीं सकते।

► **तब बादशाह ने क्या किया?**

वह अपनी फ़ौज को लेकर निकला।

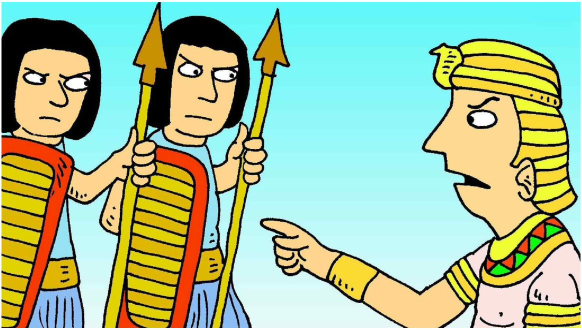

► **क्यों निकला?**

इसलिए कि इसराईलियों को पकड़ लें। तब लिखा है,

> जब इसराईलियों ने फ़िरौन और उसकी फ़ौज को अपनी तरफ़ बढ़ते देखा तो वह सख़्त घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीख़ने-चिल्लाने लगे। उन्होंने मूसा से कहा, “क्या मिसर में क़ब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने हमारे साथ क्या किया है? क्या हमने मिसर में आपसे दरख़ास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिसरियों की ख़िदमत करने दें? यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत बेहतर होता कि हम मिसरियों के ग़ुलाम रहते।”

► **मिसरियों को देखकर इसराईलियों ने क्या किया?**

वह सख़्त घबरा गए और चिल्लाने लगे। वह मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे कि आप हमें यहाँ क्यों ले आए हैं?

► **उन्होंने ऐसा क्यों कहा?**

आज़ाद होने के बावुजूद उनके दिमाग़ अब तक ग़ुलामी में थे। उन्होंने ख़ुदा के बड़े बड़े मोजिज़े देखे तो थे। फिर भी पुराने मालिक को देखते ही वह एकदम कुचले जाने के लिए तैयार थे। जिस पर देर तक ज़ुल्म हुआ है वह एकदम आज़ाद नहीं हो सकता। ऐसे मज़लूमों पर बड़े रहम की ज़रूरत है। ख़ुदा ने उन पर रहम किया। उसने मूसा के ज़रीए क्या फ़रमाया? यह फ़रमाया कि

> मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिसरियों को फिर कभी नहीं देखोगे। रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।

► **क्या मूसा ने उन्हें कहा कि हिम्मत बाँधो, अब हम दुश्मन से लड़ेंगे?**

नहीं। उसने कहा कि आराम से खड़े रहो। देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है। ईमान के सफ़र में पहला क़दम यह है कि हम बस, चुप रहें। हम अपनी ताक़त पर भरोसा न करें बल्कि इस पर कि ख़ुदा ही हमारे लिए लड़ेगा। ईमान के सफ़र में दूसरा क़दम,

ईमान की लाठी उठाओ

ख़ुदा ने फ़रमाया,

> इसराईलियों को आगे बढ़ने का हुक्म दे। अपनी लाठी को पकड़कर उसे समुंदर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इसराईली ख़ुश्क ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रेंगे।

► **मूसा को क्या करना है?**

उसे अपनी लाठी समुंदर के ऊपर उठाना है तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा।

► **क्या मूसा को अपनी लाठी से जादू करना है?**

नहीं। हर क़िस्म का जादू-टोना मना है।

► **तो फिर लाठी उठाने का क्या मक़सद है?**

यह ईमान की लाठी है। लाठी ख़ुदा की क़ुदरत का निशान है। जब मूसा ईमान के साथ उसे उठाता है तो ख़ुदा ही काम करता है। ख़ुदा चाहता है कि मूसा लाठी उठाने से ज़ाहिर करे कि मुझे ख़ुदा ही पर पूरा भरोसा है। वही हमें छुड़ाएगा। देखो, ख़ुदा चाहता है कि हम भी ईमान की लाठी उठाएँ। कि हम उस पर पूरा भरोसा करें कि वह हमें छुड़ाएगा। तब ही वह काम करेगा। आगे लिखा है,

> अल्लाह का फ़रिश्ता इसराईली लशकर के आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के आगे से हटकर उनके पीछे जा खड़ा हुआ। इस तरह बादल मिसरियों और इसराईलियों के लशकरों के दरमियान आ गया। पूरी रात मिसरियों की तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा था जबकि इसराईलियों की तरफ़ रौशनी थी। इसलिए मिसरी पूरी रात के दौरान इसराईलियों के क़रीब न आ सके।

► **समुंदर के बट जाने से पहले क्या हुआ?**

बादल का सतून इसराईलियों के पीछे खड़ा हो गया। यों मिसरी पूरी रात उन पर हमला न कर सके। फिर लिखा है,

> मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो रब ने मशरिक़ से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम रात चलती रही। उसने समुंदर को पीछे हटाकर उसकी तह ख़ुश्क कर दी। समुंदर दो हिस्सों में बट गया तो इसराईली समुंदर

> में से ख़ुश्क ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उनके दाएँ और बाएँ तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

► **लाठी को समुंदर के ऊपर उठाने से क्या हुआ?**

तेज़ आँधी चली जिससे समुंदर दो हिस्सों में बट गया। तब इसराईली समुंदर के बीच में से गुज़र गए। लिखा है,

> जब मिसरियों को पता चला तो फ़िरौन के तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उनके पीछे पीछे समुंदर में चले गए। सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिसर की फ़ौज पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी। उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया। मिसरियों ने कहा, "आओ, हम

> इसराईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उनके साथ है। वही मिसर का मुक़ाबला कर रहा है।”

► **जब मिसरी उनके पीछे समुंदर में चले गए तो क्या हुआ?**

उनमें गड़बड़ पैदा हुई।

► **इस पर मिसरियों ने क्या किया?**

वह मुड़कर भागने लगे यह कहकर कि ख़ुदा उनके साथ है। अब उन्हें ख़ुदा की अज़मत मानना पड़ा। फिर लिखा है,

> तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आकर मिसरियों, उनके रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।” मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस तरफ़ मिसरी भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यों रब ने उन्हें समुंदर में बहाकर ग़रक़ कर दिया। पानी वापस आ गया। उसने रथों और घुड़सवारों को ढाँक लिया। फ़िरौन की पूरी फ़ौज जो इसराईलियों का ताक़्क़ुब कर रही थी डूबकर तबाह हो गई। उनमें से एक भी न बचा।

► **क्या हुआ जब मिसरी भागने लगे?**

ख़ुदा के कहने पर मूसा ने लाठी पकड़कर अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया। तब पानी वापस आ गया और तमाम फ़ौज डूब गई। तब लिखा है,

> उस दिन रब ने इसराईलियों को मिसरियों से बचाया। मिसरियों की लाशें उन्हें साहिल पर नज़र आईं। जब इसराईलियों ने रब की यह अज़ीम क़ुदरत देखी जो उसने मिसरियों पर ज़ाहिर की थी तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा गया। वह उस पर और उसके ख़ादिम मूसा पर एतमाद करने लगे।

► **मिसरियों का सत्यानास देखकर इसराईलियों ने क्या महसूस किया?**

उन पर ख़ुदा का ख़ौफ़ छा गया। वह उस पर और मूसा पर एतमाद करने लगे।

► **हम इससे क्या सीखते हैं?**

ईमान के सफ़र में जब हम चुप रहकर ईमान की लाठी उठाते हैं तो ख़ुदा हमारे लिए लड़ता है। ईमान के सफ़र में तीसरा क़दम,

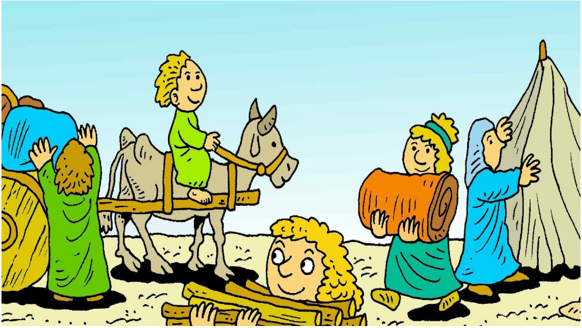

ज़िंदगी की रोटी खा लो

अब इसराईली समुंदर के पार रेगिस्तान में सफ़र करने लगे। लिखा है,

> रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, "काश रब हमें मिसर में ही मार डालता! वहाँ हम कम-अज़-कम जी भरकर गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इसलिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर जाएँ।"

► **लोग क्यों बुड़बुड़ाने लगे?**

खाने की क़िल्लत थी।

► **क्या उन्होंने ख़ुदा के मोजिज़े अभी अभी नहीं देखे थे?**

ज़रूर। देखें, कभी कभी ईमान के सफ़र के दौरान मुश्किलात भी पेश आती हैं। तब हम जल्द ही मायूस होकर बुड़बुड़ाने लगते हैं।

► **बुड़बुड़ाना क्यों ग़लत था?**

लोग एकदम वह अज़ीम काम भूल गए थे जो ख़ुदा ने अभी अभी सरंजाम दिए थे। वह यक़ीन नहीं कर सकते थे कि जिसने हमें मिसर से छुड़ाया है वह रोज़ाना की ज़रूरियात भी मुहैया करेगा। फिर भी। फिर भी ख़ुदा ने उन पर रहम किया। उसे पता था कि उनका ईमान कच्चा है। तब ख़ुदा ने मूसा से कहा,

> मैंने इसराईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज ग़ुरूब होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ’।

- **जवाब में ख़ुदा ने क्या फ़रमाया?**

  यह कि जल्द ही तुम्हें रोटी और गोश्त मिलेगा।

- **इससे हम ख़ुदा के बारे में क्या सीखते हैं?**

  यह कि वह बाप की मानिंद है। जिस तरह बाप अपने प्यारे बच्चों को खाना खिलाता है जब वह ज़िद करने लगते हैं उसी तरह ख़ुदा हमारी भी फ़िकर करता है। फिर लिखा है,

> उसी शाम बटेरों के ग़ोल आए जो पूरी ख़ैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह ख़ैमे के चारों तरफ़ ओस पड़ी थी। जब ओस सूख गई तो बर्फ़ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। [...] इसराईलियों ने इस ख़ुराक का नाम 'मन' रखा। उसके दाने धनिये की

> मानिंद सफ़ेद थे, और उसका ज़ायक़ा शहद से बने केक की मानिंद था।

► **ख़ुदा ने किस तरह लोगों की फ़िकर की?**

उसी शाम बटेर ख़ैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह रोटी जैसी चीज़ ज़मीन पर पड़ी थी।

► **सदियों के बाद एक आया जिसने फ़रमाया कि ज़िंदगी की रोटी मैं हूँ। किसने यह फ़रमाया?**

ईसा मसीह। जो रूहानी तौर पर भूका मर रहा है वह यह रोटी माँगे। तब उसे यह रोटी मिलेगी—ऐसी रोटी जो अबदी ज़िंदगी बख़्श देती है। फिर एक और मुश्किल सामने आई जिससे हम ईमान के सफ़र में चौथा क़दम सीखते हैं, यह क़दम कि

ज़िंदगी का पानी पी लो

सफ़र करते करते इसराईली एक जगह पहुँचे जिसका नाम रफ़ीदीम था। लिखा है,

> वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। इसलिए वह मूसा के साथ यह कहकर झगड़ने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।”

► **अब इसराईलियों को रोज़ की रोटी मिलती रहती थी। तो भी पानी की क़िल्लत थी। यह देखकर वह क्या करने लगे?**

वह मूसा से झगड़कर कहने लगे कि पीने के लिए पानी दो।

► **ख़ुदा ने उन्हें पहले से पानी क्यों नहीं मुहैया किया था?**

भूक की तरह प्यास भी ईमान के सफ़र का एक हिस्सा है। ख़ुदा चाहता था कि मेरे लोग इस तजरबे से सीख जाएँ कि मेरी पूरी ज़िंदगी ख़ुदा के हाथ में है। फिर लिखा है,

> मूसा ने जवाब दिया, "तुम मुझसे क्यों झगड़ रहे हो? रब को क्यों आज़मा रहे हो?"

► **लोग अपनी शिकायतों से ख़ुदा को कैसे आज़मा रहे थे?**

मूसा से झगड़ने से वह ख़ुदा से झगड़ रहे हैं। फिर लिखा है,

> लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, "आप हमें मिसर से क्यों लाए हैं? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?"
> तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़रियाद की, "मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।"

► **क्या आपने वह बात नोट की जो यह लोग बार बार कहते थे जब कोई मुश्किल सामने आती थी?**

वह मिसर का ज़िक्र करते थे। जितने वह मिसर से दूर होते जा रहे थे उतना ही मिसर जन्नत बनता जा रहा था। जल्द ही वहाँ का ज़ुल्म यादों से मिट गया था। हमारी फ़ितरत ऐसी ही होती है।

► **सिर्फ़ मूसा ने अच्छा काम किया। वह क्या?**

उसने ख़ुदा से फ़रियाद की। फिर लिखा है,

> रब ने मूसा से कहा, “कुछ बुज़ुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे तूने दरियाए-नील को मारा था। मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चट्टान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चट्टान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”

► **ख़ुदा ने क्या जवाब दिया?**

उसने फ़रमाया कि मूसा अपनी लाठी से एक मुक़र्ररा चट्टान को मारे। तब पानी निकलेगा। और ऐसा ही हुआ। लोग पानी पीकर सैर हुए। तब लिखा है,

> उसने उस जगह का नाम ‘मस्सा और मरीबा’ यानी ‘आज़माना और झगड़ना’ रखा, क्योंकि वहाँ इसराईली

> बुड़बुड़ाए और यह पूछकर रब को आज़माया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

► **इसराईलियों ने ख़ुदा को किस सवाल से आज़माया?**

यह पूछकर कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

► **इससे उन्होंने ख़ुदा को किस तरह आज़माया?**

इसमें कि उन्होंने उसकी हुज़ूरी पर शक किया।

► **यह शक क्यों इतना नामुनासिब था?**

इसलिए कि पहले उन्होंने मिसर, समुंदर और रेगिस्तान में ख़ुदा की हुज़ूरी देखी थी। इस सूरत में शक करना बहुत बुरी बात थी। लेकिन हम इनसानों की फ़ितरत ऐसी ही है। जल्द ही हम उसकी हुज़ूरी और ताक़त पर शक करते हैं।

► **लोग पानी पीकर सेर हुए। लेकिन यह आम पानी था जिसे इनसान को बार बार पीना पड़ता है। सदियों बाद एक आया जो ख़ुद ज़िंदगी का पानी था। जो यह पानी पिए वह हमेशा सेर रहेगा। उसका नाम?**

ईसा मसीह। जो उस पर ईमान लाए वह हक़ीक़ी तौर पर सेर हो जाता है।

► **इस मोजिज़े से हम क्या सीखते हैं?**

ईमान के सफ़र में जब हम चुप रहकर ख़ुदा पर भरोसा करते हैं तब ख़ुदा हमारे लिए लड़ता है। तब हम ईमान की लाठी उठाकर ज़िंदगी की रोटी और ज़िंदगी के पानी से सेर हो जाते हैं। ईमान के सफ़र में आख़िरी क़दम,

ज़िंदगी की राह पर चलो

आख़िर में इसराईली सीना पहाड़ के दामन में पहुँच गए। लिखा है,

> तब मूसा पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह के पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकारकर कहा, “याक़ूब के घराने बनी इसराईल को बता, ‘तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुमको उक़ाब के परों पर उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ।’”

► **ख़ुदा उन्हें किस तरह अपने पास लाया?**

उक़ाब की तरह। वह अपनी क़ौम को उक़ाब के परों पर उठाकर अपने पास लाया। कितनी प्यारी तस्वीर! उक़ाब जब हवा में मँडलाता है तो एक भी झटका नहीं लगता। यही ख़ुदा की क़ौम की हालत है। आगे वह फ़रमाता है,

> चुनाँचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक़ चलो तो फिर तमाम क़ौमों में से मेरी ख़ास मिलकियत होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, लेकिन तुम मेरे लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस क़ौम होगे।

► **अगर लोग ख़ुदा की सुनें तो क्या होगा?**

वह उसकी ख़ास मिलकियत होंगे। बल्कि इससे बढ़कर वह ख़ुदा के लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस क़ौम होंगे।

► **इसका क्या मतलब है?**

ख़ुदा की मिलकियत होना और मुक़द्दस होना एक ही बात है। जो ख़ुदा की मिलकियत है वह मुक़द्दस है। क्योंकि ख़ुदा मुक़द्दस और पाक है।

► **क्या इसराईली क़ौम अब से मुक़द्दस रही?**

नहीं। हम देखेंगे कि इसके ऐन बाद उन्होंने अपने लिए बुत बनाया। साल बीतते गए, फिर भी इसराईल की हालत सिर्फ़ महदूद हद तक मुक़द्दस रही।

► **क्यों?**

इनसान अपनी ताक़त से सही मानों में मुक़द्दस और पाक नहीं हो सकता। इसकी ज़रूरत है कि कोई उसे मख़सूसो-मुक़द्दस करे। यह बाद में ईसा मसीह में हुआ। फिर लिखा है,

> रब ने मूसा से कहा, “अब लोगों के पास लौटकर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर। [...] उन्हें ख़बरदार कर कि हुदूद को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उसके दामन को छुओ।

► **लोग क्यों पाक-साफ़ हो जाएँ? वह क्यों पहाड़ के दामन को न छुएं?**

इसलिए कि पहाड़ ख़ुदा की हुज़ूरी की वजह से पाक और मुक़द्दस है। ख़ुदा पाक और मुक़द्दस है। इनसान ज़्यादा क़रीब आया तो भस्म हो गया। तब लिखा है,

> तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर घना बादल छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। ख़ैमागाह में लोग लरज़ उठे।

► **पहाड़ पर धुआँ क्यों छा गया, बिजली क्यों चमकने लगी वग़ैरा?**

इसलिए कि ख़ुदा आग में उस पर उतर आया। यह देखकर लोग ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। बोले,

> आप ही हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएँगे।

तब ख़ुदा ने मूसा को पहाड़ पर दस अहकाम सुनाए। लिखा है,

> मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया।
>
> 1. मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।
> 2. अपने लिए बुत न बनाना। [...]
> 3. रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। [...]
> 4. सबत के दिन का ख़याल रखना।
> 5. अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। [...]
> 6. क़त्ल न करना।
> 7. ज़िना न करना।
> 8. चोरी न करना।
> 9. अपने पड़ोसी के बारे में झूठी गवाही न देना।
> 10. अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। [...]

► **पहली बात क्या है?**

यह कि ख़ुदा इसराईल का ख़ुदा है जो उसे मुल्के-मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया।

► **यह पहली बात दस अहकाम की बुनियाद है। क्यों?**

ख़ुदा ने इसराईल को छुड़ाकर अपनी मख़सूस क़ौम बना ली थी। दस अहकाम से वह अपनी क़ौम को ज़िंदगी की राह दिखाता है। जो भी ख़ुदा की क़ौम में शामिल है वह ज़िंदगी की इस राह पर चलता

है। जो यह नहीं करता वह ख़ुदा की क़ौम और ज़िंदगी से दूर रहता है।

► **पहले चार अहकाम किससे ताल्लुक़ रखते हैं?**

ख़ुदा से। जो इनका ख़याल रखता है उसका ख़ुदा से ताल्लुक़ बहाल रहता है।

► **आख़िरी 6 अहकाम का ताल्लुक़ किससे है?**

इनसान से। आपस के ताल्लुक़ात से। जब हम इनके मुताबिक़ चलते हैं तो एक दूसरे के साथ ताल्लुक़ात बहाल और सेहतमंद रहते हैं।

► **क्या इसराईली अब से पूरे तौर से ज़िंदगी की इस राह पर चलते रहे?**

नहीं। इनसान की नाक़िस फ़ितरत पूरे तौर से इस पर रहने से क़ासिर रहता है। लेकिन सदियों बाद एक आया जिसने फ़रमाया कि मैं ही ज़िंदगी की राह हूँ।

► **कौन?**

ईसा मसीह। उसी के हाथ हम सही राह पर चलकर ख़ुदा के हुज़ूर आ सकते हैं।

► **क्या आपको ज़िंदगी की यह रोटी, ज़िंदगी का यह पानी, ज़िंदगी की यह राह हासिल है?**

यह हासिल करने के लिए सिर्फ़ दो काम दरकार हैं : पहले यह कि चुप रहो और दूसरे यह कि आप ईमान की लाठी उठाओ।

तौरेत, ख़ुरूज 13-14; 16–17; 19-20

जब फ़िरौन ने इसराईली क़ौम को जाने दिया तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े में से गुज़रनेवाले रास्ते से लेकर न गया, अगरचे उस पर चलते हुए वह जल्द ही मुल्के-कनान पहुँच जाते। बल्कि रब ने कहा, "अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा न हो कि वह इस वजह से अपना इरादा बदलकर मिसर लौट जाएँ।" इसलिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से लेकर गया, और वह रेगिस्तान के रास्ते से बहरे-क़ुलज़ुम की तरफ़ बढ़े। मिसर से निकलते वक़्त मर्द मुसल्लह थे। [...]

रब उनके आगे आगे चलता गया, दिन के वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी मिले। यों वह दिन और रात सफ़र कर सकते थे। दिन के वक़्त बादल का सतून और रात के वक़्त आग का सतून उनके सामने रहा। वह कभी भी अपनी जगह से न हटा। [...]

इसराईल समुंदर में से गुज़रता है

तब रब ने मूसा से कहा, "इसराईलियों को कह देना कि वह पीछे मुड़कर मिजदाल और समुंदर के बीच यानी फ़ी-हख़ीरोत के नज़दीक रुक जाएँ। वह बाल-सफ़ोन के मुक़ाबिल साहिल पर अपने ख़ैमे लगाएँ। यह देखकर फ़िरौन समझेगा कि इसराईली

रास्ता भूलकर आवारा फिर रहे हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ़ उन्हें घेर रखा है। फिर मैं फ़िरौन को दुबारा अड़ जाने दूँगा, और वह इसराईलियों का पीछा करेगा। लेकिन मैं फ़िरौन और उसकी पूरी फ़ौज पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

इसराईलियों ने ऐसा ही किया।

जब मिसर के बादशाह को इत्तला दी गई कि इसराईली हिजरत कर गए हैं तो उसने और उसके दरबारियों ने अपना ख़याल बदलकर कहा, “हमने क्या किया है? हमने उन्हें जाने दिया है, और अब हम उनकी ख़िदमत से महरूम हो गए हैं।” चुनाँचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तैयार करवाया और अपनी फ़ौज को लेकर निकला। वह 600 बेहतरीन क़िस्म के रथ और मिसर के बाक़ी तमाम रथों को साथ ले गया। तमाम रथों पर अफ़सरान मुक़र्रर थे।

जब इसराईलियों ने फ़िरौन और उसकी फ़ौज को अपनी तरफ़ बढ़ते देखा तो वह सख़्त घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीख़ने-चिल्लाने लगे। उन्होंने मूसा से कहा, “क्या मिसर में क़ब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने हमारे साथ क्या किया है? क्या हमने मिसर में आपसे दरख़ास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें

मिसरियों की ख़िदमत करने दें? यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत बेहतर होता कि हम मिसरियों के ग़ुलाम रहते।”

लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिसरियों को फिर कभी नहीं देखोगे। रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।”

फिर रब ने मूसा से कहा, “तू मेरे सामने क्यों चीख़ रहा है? इसराईलियों को आगे बढ़ने का हुक्म दे। अपनी लाठी को पकड़कर उसे समुंदर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इसराईली ख़ुश्क ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रेंगे। मैं मिसरियों को अड़े रहने दूँगा ताकि वह इसराईलियों का पीछा करें। फिर मैं फ़िरौन, उसकी सारी फ़ौज, उसके रथों और उसके सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। जब मैं फ़िरौन, उसके रथों और उसके सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा तो मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

अल्लाह का फ़रिश्ता इसराईली लशकर के आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के आगे से हटकर उनके पीछे जा खड़ा हुआ। इस तरह बादल मिसरियों और इसराईलियों के लशकरों के दरमियान आ गया। पूरी रात मिसरियों की तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा था जबकि

इसराईलियों की तरफ़ रौशनी थी। इसलिए मिसरी पूरी रात के दौरान इसराईलियों के क़रीब न आ सके।
मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो रब ने मशरिक़ से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम रात चलती रही। उसने समुंदर को पीछे हटाकर उसकी तह ख़ुश्क कर दी। समुंदर दो हिस्सों में बट गया तो इसराईली समुंदर में से ख़ुश्क ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उनके दाएँ और बाएँ तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।
जब मिसरियों को पता चला तो फ़िरौन के तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उनके पीछे पीछे समुंदर में चले गए। सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिसर की फ़ौज पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी। उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया। मिसरियों ने कहा, “आओ, हम इसराईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उनके साथ है। वही मिसर का मुक़ाबला कर रहा है।”
तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आकर मिसरियों, उनके रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।” मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस तरफ़ मिसरी भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यों रब ने उन्हें समुंदर में बहाकर ग़रक़ कर दिया। पानी वापस आ गया। उसने रथों और घुड़सवारों

को ढाँक लिया। फ़िरौन की पूरी फ़ौज जो इसराईलियों का ताक़्क़ुब कर रही थी डूबकर तबाह हो गई। उनमें से एक भी न बचा।
लेकिन इसराईली ख़ुश्क ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रे। उनके दाएँ और बाएँ तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।
उस दिन रब ने इसराईलियों को मिसरियों से बचाया। मिसरियों की लाशें उन्हें साहिल पर नज़र आईं। जब इसराईलियों ने रब की यह अज़ीम क़ुदरत देखी जो उसने मिसरियों पर ज़ाहिर की थी तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा गया। वह उस पर और उसके ख़ादिम मूसा पर एतमाद करने लगे।

मन और बटेर

इसके बाद इसराईल की पूरी जमात एलीम से सफ़र करके सीन के रेगिस्तान में पहुँची। [...] रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, "काश रब हमें मिसर में ही मार डालता! वहाँ हम कम-अज़-कम जी भरकर गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इसलिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर जाएँ।"
तब रब ने मूसा से कहा, "मैं आसमान से तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर जाकर उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना जमा करें। इससे मैं उन्हें आज़माकर देखूँगा कि आया वह मेरी सुनते हैं कि नहीं। हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना

जमा करें जितना कि एक दिन के लिए काफ़ी हो। लेकिन छटे दिन जब वह खाना तैयार करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।”

मूसा और हारून ने इसराईलियों से कहा, “आज शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया है। और कल सुबह तुम रब का जलाल देखोगे। उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्योंकि असल में तुम हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ा रहे हो। फिर भी रब तुमको शाम के वक़्त गोश्त और सुबह के वक़्त वाफ़िर रोटी देगा, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब के ख़िलाफ़ हैं।”

मूसा ने हारून से कहा, “इसराईलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं।’”

जब हारून पूरी जमात के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलटकर रेगिस्तान की तरफ़ देखा। वहाँ रब का जलाल बादल में ज़ाहिर हुआ। रब ने मूसा से कहा, “मैंने इसराईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज ग़ुरूब होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।’”

उसी शाम बटेरों के ग़ोल आए जो पूरी ख़ैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह ख़ैमे के चारों तरफ़ ओस पड़ी थी। जब ओस सूख गई तो बर्फ़ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। जब इसराईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन हू?” यानी “यह क्या है?” क्योंकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है।

मूसा ने उनको समझाया, “यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उसके ख़ानदान को ज़रूरत हो। अपने ख़ानदान के हर फ़रद के लिए दो लिटर जमा करो।”

इसराईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और बाज़ ने कम जमा किया। लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी था। जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था। [...]

इसराईलियों ने इस ख़ुराक का नाम ‘मन’ रखा। उसके दाने धनिये की मानिंद सफ़ेद थे, और उसका ज़ायक़ा शहद से बने केक की मानिंद था।

चट्टान से पानी

फिर इसराईल की पूरी जमात सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफ़ीदीम में उन्होंने ख़ैमे लगाए।

वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। इसलिए वह मूसा के साथ यह कहकर झगड़ने लगे, "हमें पीने के लिए पानी दो।"

मूसा ने जवाब दिया, "तुम मुझसे क्यों झगड़ रहे हो? रब को क्यों आज़मा रहे हो?"

लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, "आप हमें मिसर से क्यों लाए हैं? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?"

तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़रियाद की, "मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।"

रब ने मूसा से कहा, "कुछ बुज़ुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे तूने दरियाए-नील को मारा था। मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चट्टान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चट्टान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।"

मूसा ने इसराईल के बुज़ुर्गों के सामने ऐसा ही किया। उसने उस जगह का नाम ‘मस्सा और मरीबा’ यानी ‘आज़माना और झगड़ना’ रखा, क्योंकि वहाँ इसराईली बुड़बुड़ाए और यह पूछकर रब को आज़माया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

कोहे-सीना

इसराईलियों को मिसर से सफ़र करते हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे। [...] वहाँ उन्होंने रेगिस्तान में पहाड़ के क़रीब डेरे डाले।

तब मूसा पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह के पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकारकर कहा, “याक़ूब के घराने बनी इसराईल को बता, ‘तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुमको उक़ाब के परों पर उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ। चुनाँचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक़ चलो तो फिर तमाम क़ौमों में से मेरी ख़ास मिलकियत होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, लेकिन तुम मेरे लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस क़ौम होगे।’ अब जाकर यह सारी बातें इसराईलियों को बता।”

मूसा ने पहाड़ से उतरकर और क़ौम के बुज़ुर्गों को बुलाकर उन्हें वह तमाम बातें बताईं जो कहने के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था। जवाब में पूरी क़ौम ने मिलकर कहा, “हम रब की हर बात पूरी

करेंगे जो उसने फ़रमाई है।” मूसा ने पहाड़ पर लौटकर रब को क़ौम का जवाब बताया।
जब वह पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तेरे पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझसे हमकलाम होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा रखेंगे।”
तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताईं जो लोगों ने की थीं।
रब ने मूसा से कहा, “अब लोगों के पास लौटकर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास धोकर तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाएँ, क्योंकि उस दिन रब लोगों के देखते देखते कोहे-सीना पर उतरेगा। लोगों की हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़ की हदें मुक़र्रर कर। उन्हें ख़बरदार कर कि हुदूद को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उसके दामन को छुओ। जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा जाए। [...]
तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर घना बादल छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। ख़ैमागाह में लोग लरज़ उठे। तब मूसा लोगों को अल्लाह से मिलने के लिए ख़ैमागाह से बाहर पहाड़ की तरफ़ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए। सीना पहाड़ धुएँ से ढका हुआ था, क्योंकि रब आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से धुआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़ शिद्दत से

लरज़ने लगा। नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा। […]

दस अहकाम

तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फ़रमाईं,

1. "मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया। मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।
2. अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। न बुतों की परस्तिश, न उनकी ख़िदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।
3. रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।
4. सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो। हफ़्ते के पहले छः दिन

अपना काम-काज कर, लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। क्योंकि रब ने पहले छः दिन में आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इसलिए रब ने सबत के दिन को बरकत देकर मुक़र्रर किया कि वह मख़सूस और मुक़द्दस हो।

5. अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।
6. क़त्ल न करना।
7. ज़िना न करना।
8. चोरी न करना।
9. अपने पड़ोसी के बारे में झूठी गवाही न देना।
10. अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उसकी बीवी का, न उसके नौकर का, न उसकी नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उसकी किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

लोग घबरा जाते हैं

जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। उन्होंने मूसा से कहा, “आप ही हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएँगे।” लेकिन मूसा ने उनसे कहा, “मत डरो, क्योंकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उसका ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।”